



भारतीय ग्रामीण युवाओं का सशक्तिकरण

राजेश टी.*, तुषार अठारे*, एस.के. रॉय* और महेश बी. जाधव*

॥ आर्या परियोजना, युवाओं के सशक्तिकरण के माध्यम से कृषि क्षेत्र को फिर से जीवंत करने की दिशा में एक कदम है। युवाओं की अनूठी आकांक्षाओं और महत्वाकांक्षाओं को संबोधित करके, यह परियोजना एक पुनर्जीवित और नवीन कृषि परिदृश्य के बीज बो रही है। जैसे-जैसे आर्या परियोजना अपनी पहुंच और प्रभाव का विस्तार कर रही है, यह न केवल कृषि की धारणा को परिवर्तित कर रही है, बल्कि भारत को सतत ग्रामीण विकास, तकनीकी उन्नति और आर्थिक समृद्धि की ओर अग्रसर होने के लिए भी प्रेरित कर रही है। कुल मिलाकर, आर्या परियोजना कृषि के बारे में धारणाओं को बदलने, इसे एक आकर्षक और गतिशील रोजगार विकल्प बनाने और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि युवा, कृषि क्षेत्र में नवाचार और विकास को संचालित करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से सुसज्जित हों। ॥

आर्या परियोजना का अर्थ है 'कृषि में युवाओं को आकर्षित करना और बनाए रखना'। यह परियोजना कृषि के क्षेत्र में युवाओं को बनाए रखने की चुनौतियों का समाधान करने के लिए वर्ष 2015-16 के दौरान भाकृअनुप द्वारा लागू की गई। इसका उद्देश्य युवाओं के बीच कृषि शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देना, उन्हें कृषि से संबंधित आजीविका अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना और यह सुनिश्चित करना है कि वे कृषि क्षेत्र में प्रयत्नशील रहें। यह

परियोजना भारत में कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) के तहत विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से कृषि शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता के क्षेत्र में बदलाव के प्रतीक के रूप में उभरी है। युवाओं के लिए उद्यमिता प्रशिक्षण इकाइयों के रूप में सेवा करने के लिए कृषि विज्ञान केंद्रों के स्तर पर 1 या 2 उद्यम इकाइयां स्थापित की गईं। परियोजना का उद्देश्य कृषि प्रशिक्षण और संसाधनों तक समान पहुंच को बढ़ावा देने के लिए विविध पृष्ठभूमि, समुदायों और महिलाओं/पुरुषों को शामिल करना है।

'युवा' ही क्यों

कृषि के माध्यम से भारतीय युवाओं को

सशक्त बनाना एक क्रांतिकारी अवसर प्रदान करता है। अपनी आकांक्षाओं को कृषि क्षेत्र से जोड़कर, भारत खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकता है। इसके साथ ही नए रोजगार के अवसर उत्पन्न कर ग्रामीण विकास को बढ़ावा दे सकता है। युवा पीढ़ी के बीच नवाचार, उद्यमिता और टिकाऊ प्रथाएं प्रोत्साहित करके, एक जीवंत कृषि दृष्टिकोण तैयार हो सकता है। यह आजीविका को सुरक्षित रखने के अलावा देश के आर्थिक विकास और समग्र समृद्धि में भी योगदान करता है।

आर्या परियोजना के उद्देश्य

युवाओं को आकर्षित करना

आर्या परियोजना का एक प्राथमिक

*भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पुणे

पश्चिमी भारत में हासिल की गई उपलब्धियां

वर्ष 2015-16 में भाकृअनुप ने अटारी के तहत देशभर के 25 कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा परियोजना का प्रारंभ किया तथा वर्ष 2019-20 में और 75 कृषि विज्ञान केंद्र इसमें शामिल किये गए। कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पुणे के क्षेत्रीय के कार्यालय 8 के कार्यक्षेत्र अंतर्गत आने वाले महाराष्ट्र और गुजरात के 12 कृषि विज्ञान केंद्रों में आर्या परियोजना के वर्ष 2017-18 से 2022-23 के बीच महाराष्ट्र और गुजरात में प्राप्त योजनाओं का संचालन करता है। महाराष्ट्र और गुजरात में 12 आर्या केंद्रों ने ग्रामीण समुदाय के युवाओं को विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में शिक्षित किया और उन्हें उद्यमी इकाइयां स्थापित करने का अवसर प्रदान किया। इस समयानुसार, महाराष्ट्र और गुजरात मिलाकर कुल 523 प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के माध्यम से 11952 ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है। इनमें 988 उद्यमी इकाइयां स्थापित की गई हैं और 146 समृद्धि के सकारात्मक समूहों को गठित किया गया है।

लक्ष्य युवाओं का ध्यान आकर्षित करना और उन्हें आजीविका के रूप में संबंधित उद्यमिता चुनने के लिए प्रोत्साहित करना है।

कौशल विकास

आर्या परियोजना कौशल विकास की आवश्यकता को पहचानती है। यह ज्ञान को अद्यतन करने, उभरती प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करने और युवाओं को सक्षम

आर्या

उद्यमिता की भावना को बढ़ाने, कौशल विकास और प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए, आर्या परियोजना की शुरुआत की गई है। इस परियोजना में, कृषि धारणाओं को नया आयाम देने और स्थायी ग्रामीण विकास के लिए युवाओं की मानसिक क्षमताओं का उपयोग करने के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार की गई है। इस परियोजना के संकल्प के साथ, यह पहल ग्रामीण क्षेत्रों में युवा पीढ़ी को प्रेरित कर रही है, ताकि वे कृषि क्षेत्र में अपनी अनुसंधान और उद्यमिता क्षमताओं का पूरी तरह से उपयोग कर सकें।



आर्या परियोजना के तहत मुर्गीपालन

बनाने के लिए व्यावहारिकता सीखने के अनुभवों को बढ़ाने की दिशा में काम करती है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रशिक्षण किसी भी प्रयास की सफलता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें कृषि और संबंधित उद्यमों के क्षेत्र भी अपवाद नहीं हैं। निरंतर विकसित हो रहे परिदृश्य के साथ प्रौद्योगिकी, बाजार की गतिशीलता और दीर्घकालिक आचरण के कारण, प्रभावी प्रशिक्षण कृषि और इससे जुड़े उद्यम संबंधित व्यक्तियों के विकास और स्थिरता के लिए आधारशिला बन जाता है। यह प्रशिक्षण युवाओं को व्यावहारिक अनुभवों के साथ सफलता के लिए आवश्यक दक्षताओं से अवगत करवाने में सहायक रहा है।

उद्यमिता

यह परियोजना युवाओं को कृषि व्यवसाय उद्यमों, मूल्य श्रृंखलाओं और नवाचारों से अवगत होने के लिए प्रोत्साहित करके उनमें उद्यमशीलता की मानसिकता को बढ़ावा देती है। संसाधनों के मार्गदर्शन और कौशल विकास प्रशिक्षण तक पहुंच की सुविधा प्रदान करके, युवाओं को स्थायी कृषि उद्यम बनाने और नेतृत्व क्षमता वर्धन करने के लिए सशक्त बनाती है।

उद्यमों के विकल्प: आर्या परियोजना के तहत प्रशिक्षुओं के पास विविध उद्यमों के कई विकल्प हैं। उदाहरण के लिए कृषि उत्पादों का मूल्यवर्धन, मशरूम उत्पादन,

केंचुआ खाद उत्पादन तकनीक, मुर्गीपालन, बकरी पालन, मत्स्य पालन, शूकर पालन, बत्तख पालन, मधुमक्खी पालन, नर्सरी प्रबंधन और उत्पादन, बीज उत्पादन, संरक्षित खेती, लाख उत्पादन एवं फूलों की खेती आदि सम्मिलित हैं।

प्रशिक्षण के लिए युवा

भाकृअनुप ने आर्या परियोजना के तहत प्रशिक्षण के लिए 35 वर्ष से कम आयु के पुरुष, महिलाएं, युवा-युवतियों के चयन हेतु बुनियादी मानदंड तय किए हैं। इनके अन्य सामान्य गुणों पर भी विचार किया जाता है। इनमें सीखने की क्षमता, उद्यमी की गुणवत्ता, नेतृत्व, सहकारिता और एक इकाई को सफलतापूर्वक चलाने के बाद अन्य युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करना शामिल है।

रोजगार सृजन

प्रत्येक उद्यम के सुचारू संचालन के लिए श्रम शक्ति की आवश्यकता होती है। रोजगार सृजन इकाई शुरू करने के बाद उद्यमशीलता इकाई भी स्थापित की जाती है। इन इकाइयों का एक अन्य लाभ यह है कि ग्राम-स्तरीय रोजगार सृजन से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कम हो जाता है। किसी भी कृषि परियोजना के कार्यान्वयन चरण के दौरान, नियोजित गतिविधियों को क्रियान्वित किया जाता है। इसमें परियोजना प्रारूप के अनुसार संसाधनों का आवंटन और उपयोग शामिल है।